

2101000102050035
EXAMINATION FEBRUARY-MARCH 2024
BACHELOR OF ARTS (FIRST YEAR)
(SECOND SEMESTER) NON -NEP
HINDI - III (KAVYA-SARITA) - LEVEL 5
आधुनिक हिंदी काव्य सरिता

[Time: As Per Schedule]

[Max. Marks: 50]

Instructions:

1. 1. Fill up strictly the following details on your answer book
 - a. Name of the Examination : **BACHELOR OF ARTS (SECOND SEMESTER)**
 - b. Name of the Subject : **HINDI - III (KAVYA-SARITA)**
 - c. Subject Code No : **2101000102050035**
2. Sketch neat and labelled diagram wherever necessary.
3. Figures to the right indicate full marks of the question.
4. All questions are compulsory.

Seat No:

--	--	--	--	--	--

Student's Signature

Q.1 निम्न लिखित बहुविकल्पी प्रश्नों के सही उत्तर दीजिए ।

10

1. वसंत के आगमन से कौन सबसे ज्यादा खुश हो कर अपनी मधुर आवाज से उसका स्वागत करता है?
 - (अ) कोयल
 - (ब) झींगुर
 - (क) पपिहा
 - (ड) चातक
2. निम्न लिखित में से निराला का पूरा नाम कौन सा है ?
 - (अ) सूरजकांत त्रिपाठी
 - (ब) सूर्यकांत त्रिपाठी
 - (क) सुमितकांत त्रिपाठी
 - (ड) इनमें से कोई
3. प्रातः काल का स्वागत कौन करता है
 - (अ) चिड़ियाँ
 - (ब) तरुवासिनी
 - (क) नभचारिणी
 - (ड) उपर्युक्तसभी

4. कवि और कल्पना' कविता का रचियता कौन है ?
(अ) महादेवीवर्मा (ब) धर्मवीर भारती
(क) सुमित्रानंदन पंत (ड) सूर्यकांत त्रिपाठी
5. कौन अगणीतपद, मुख, कर वाली है?
(अ) प्यास (ब) भावानी.
(क) भूख (ड) काली माता

Q.2 शेरसिंह का शस्त्र समर्पण कविता में व्यक्त विचार अपने शब्दोंमें स्पष्ट कीजिए । **13**

अथवा

" 'कुकुरमुत्ता 'कविता में निरालाजीने सर्वहारावर्ग के प्रति सहानुभूति एवं शोषकवर्ग के प्रति आक्रोश का चित्रण किया गया है।" इस कथन को स्पष्ट कीजिए ।

Q.3 'मै नीर भरी दुःख की बदली कविता का केंद्रीय भाव स्पष्ट कीजिए । **13**

अथवा

'भीष्म का पश्चात्ताप कविता में पितामह भीष्म की मनःव्यथा का चित्रण किया गया है।
"इस कथन को सिद्ध कीजिए ।

Q.4 (अ) टिप्पणी लिखिए। (किन्ही एक) **7**

(1) गीत फरोश' कविता का केंद्रिय भाव ।

अथवा

(1) 'बबूल' कविता में चित्रित संदेश ।

(ब) ससंदर्भ व्याख्या लिखिए । (किन्ही एक) **7**

(1) वृद्ध वनस्पतियों की टूठी शाखाओं में
पोर पोर टहनी - टहनी का लगा दहकने
टेसू निकले, मुकुलों के गुच्छे गदराये,

अलसी के नीले फूलों पर नभ मुस्काया ।

अथवा

स्वतंत्र क्रांति ज्वाल में निडर बनो सुकेशिनी
विनाश की सजीव नग्नता ढँको सुवेशिनी
विनाश से डरो नहीं, विकास से सरो नहीं
सृष्टि के लिए बनों प्रथम विनाश स्वामिनी-
कल्पने विलासिनी।
